

सही समय को न समझा तो समय आपको मजबूर कर देगा

हम सभी जिस दौर से गुजर रहे हैं, जिस लक्ष्य को लिये आगे बढ़ रहे हैं, साथ-साथ जो समय की भी मांग है, क्या हम वैसा ही कर्म कर रहे हैं? क्या हम उसी गति से और उसी ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहे हैं? अभी जो समय चल रहा है वो है रिकॉर्ड भरने का, शूटिंग करने का। जब कोई रिकॉर्ड करते हैं तो विशेष तौर पर तीन बातों का अटेंशन रखते हैं, एक तो वातावरण, दूसरा वाणी, तीसरा वृत्ति। जब हृदय का रिकॉर्ड भरने वाले भी इतना अटेंशन रखते हैं तो हमारा कितना ध्यान रहना चाहिए! हमें तो वातावरण को अपनी अंतर्मुखता की शक्ति से श्रेष्ठ बनाकर बाहर के शोरगुल को कंट्रोल में रखना है। इसी तरह वाणी को भी राजयुक्त और युक्तियुक्त बनाना होगा, तभी उसमें ताकत भरेगी। हमें देखना चाहिए कि जो हम कर्म कर रहे हैं, जो कहने या बोलने या मैसेज देने की कोशिश कर रहे हैं, उसमें वो खुशबू, वो बल है? इस तरह से हमें अपने आप का चेकर बनना होगा।

जैसे टेप में भी पहले रिकॉर्ड भरकर फिर देखते हैं और सुनते हैं कि देखें कैसा भरा है, ठीक है या नहीं। वैसे ही क्या हम भी साक्षी होकर देखते हैं? अगर देखते हैं तो देखने से क्या लगता है? अपने आप को वो जंचता है कि ठीक भरा है या अपने आप को देखते हुए भी सोचते हैं कि इससे अच्छा भरना चाहिए? रिजल्ट तो देखते हैं ना। इसी तरह हम जो पुरुषार्थ कर रहे हैं, जिस गति से आगे बढ़ रहे हैं, जो हमने लक्ष्य रखा है और उस ओर किस पड़ाव तक पहुंचे हैं, इसको चेक करना चाहिए। अगर हम साक्षी होकर इस तरह से चेक करते हैं तब हम फिक्स कर सकते हैं कि हमें और क्या-क्या करना है, रफ्तार को कितना बढ़ाना है। अन्यथा तो हम कोल्हू वाले बैल की तरह वहीं के वहीं होंगे। हमें लगेगा कि हम तो रात भर चले लेकिन सवेरा होने पर हम पायेंगे कि हम तो वहीं के वहीं हैं। एक चीज़, जो चला गया और वापिस नहीं आ सकता, वो है समय। अभी जो हमारा समय है, उसको अगर हमने महत्व नहीं दिया तो समय हमें मजबूर करेगा। समय एक तरह से प्रकृति है ना, और हम पुरुष हैं। पुरुष ही प्रकृति का रचयिता है। अगर रचना के आधार पर रचयिता चले तो क्या हालत होगी! समय का धक्का लगने से जो चल परे, उसको क्या कहा जायेगा! कई बार हम अपने आप से सोचते हैं, हाँ ठीक है, हो जायेगा, कर लेंगे, समय पर सम्पूर्ण बन जायेंगे। तो ऐसे आलस्य का तकिया लेकर कछुए की चाल चलने वाले का क्या भविष्य होगा! सोच सकते हैं, समझ सकते हैं!

तो अब समय है रिमिज़िम बरसात का। ये मौसम है मन-इच्छित फल प्राप्त करने का, तपस्या करने का और सिद्धि प्राप्त करने का। तो एकांत में साक्षी होकर अपने आप का चेकर भी बनना है और मेकर भी। मेकर यानि कि उसको प्रैक्टिकल में लाकर बहुत सुंदर रिकॉर्डिंग कर अपने आप को संवारना है, जीवन का सुमधुर गीत भरना है। जब जान गये, संगमयुग में बाबा हमारे साथ-साथ है तो बाबा के साथ रहकर कार्य करना अर्थात् जीवन को सुंदरता से भरते हुए रिकॉर्डिंग करते हुए आगे बढ़ना। ठीक है ना। छोड़ दो सब आने वाली वातावरण की अरचनों को, असुरीले संस्कारों को तथा व्यर्थ को। बस, अब तो यही करना है जो बाबा को पसंद है, जो मुझे पसंद है और जो समयोचित पुरुषार्थ की गति को आगे ले जाये।



राजयोगिनी ब.क. गंगाधर माई

आज्ञाकारी मतलब कदम के ऊपर कदम रखना

शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के 4 कदम सुनाये हैं- एक तो आज्ञाकारी बने, आज्ञाकारी बनने के कारण शक्तिशाली बन गये। दूसरा- सर्वश त्यागी बने, तीसरा- वफादार और चौथा- फरमानबरदार बने। अगर हमें भी ब्रह्मा बाबा के समान बनना है, समीप आना है, तो ब्रह्मा बाबा की इन चार विशेषताओं को अपने में धारण करना है।

ब्रह्मा बाबा की पहली विशेषता है- आज्ञाकारी। अमृतवेले उठना कैसे है, बैठना कैसे है, योग कैसे लगाना है वो सब आज्ञा मिली हुई है। हम अमृतवेले से लेकर देखें बाबा की जो भी आज्ञा है उसको हमने पालन किया? कई अमृतवेले उठते हैं, आज्ञा मानकर बैठते हैं लेकिन चले जाते हैं निद्रालोक में। बाबा की आज्ञा है कि उठो, सकाश दो, अपने में भी शक्ति भरो, दुनिया के वायुमण्डल को चेंज करो, वो तो किया ही नहीं, सिर्फ आधी बात मानी उठकर बैठ गये। मन किसी भी उलझन में उलझा हुआ होगा तो खुशी नहीं होगी, खुशी नहीं होगी तो भारी होंगे। जैसे शरीर भारी होता तो नींद आती है। कईयों को नींद नहीं आती, लेकिन मन-बुद्धि भटकती रहती है। या तो मन की थकावट रहती है या तन की थकावट। हार्ड वर्क किया, 12 बजे सोये, दिन में आराम नहीं किया, तो तन की भी थकावट हो सकती है, जिसके कारण योग में मजा नहीं आयेगा, भारी-भारी लगेगा। उस समय कोशिश नहीं करो कि मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ, बाबा भी शांति का सागर है, बस शांति में



राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

आज्ञाकारी का मतलब यह है कि कदम के ऊपर कदम रखना और कदम भी पूरा फिट हो। बाबा ने कहा है कि ज्ञान की सेवा करो लेकिन निःस्वार्थ सेवा करो।

चला जाऊं। ऐसे टाइम पर ज्ञान की किसी बात को मनन करना चाहिए। जब कोई भी बात सोचो तो नींद कम आती है। उस समय फरिश्ता बनकर बाबा से रूहरिहान करो, मधुबन की सीन-सीनरियां याद करो। तो पहले अपने को फ्रेश करो, पीछे परमधाम की सैर करो।

बाबा कहते हैं कर्मयोगी बनो तो कर्म करते-करते कहीं कर्म कॉन्शियस तो नहीं बन जाते? काम करते-करते काम के ही विचार चलते हैं, जो जरूरी नहीं होते। कई काम ऐसे होते हैं जिसमें हाथ-पाँव

चलते हैं, बुद्धि से सोचने की बात कम होती है। जैसे कपड़े धुलाई कर रहे हैं, इसमें फुल बुद्धि लगाने की जरूरत नहीं है। कर्म और योग दोनों का बैलेन्स रखो- यह है बाबा की आज्ञा। कभी भी कोई भी काम में आज्ञाकारी हैं तो फुल आज्ञाकारी हैं? जैसे बाबा ने कहा कि प्रवृत्ति में रहना है। तो कई कहते हैं कि बाबा ने तो कहा है कि प्रवृत्ति में रहना है लेकिन यह भूल जाते हैं कि प्रवृत्ति में कमल पुष्प समान पवित्र रहना है। आज्ञाकारी का मतलब यह है कि कदम के ऊपर कदम रखना और कदम भी पूरा फिट हो। बाबा ने कहा है कि ज्ञान की सेवा करो लेकिन निःस्वार्थ सेवा करो। नाम-मान-शान के स्वार्थ में फंसकर नहीं करो। स्वार्थ है तो वह सेवा भाव नहीं हुआ। सेवा भाव की निशानी है अगर सेवा भाव है तो हम अपने को निमित्त समझेंगे और निमित्त वाले की निशानी है निर्मान अर्थात् मान से परे।

तो हर बात में जो भी बाबा की आज्ञायें हैं जैसे याद में बैठकर भोजन बनाओ, याद में बैठ कर खाओ। लेकिन जब भोजन आता है तो पहले तो याद कर लेते हैं फिर भूल जाते हैं। बाबा ने यह तो कहा नहीं है कि एक गिट्टी मुझको खिलाओ, बाकी आप खाओ। बाबा ने तो कहा है कि याद में नहीं खाते तो माया खा जाती है। फिर माया में ताकत ज्यादा आ जाती है इसलिए आपका सामना करती है। हमको यहाँ की कमाई ही सतयुग में खानी है। तो 21 जन्मों के लिए हमको अभी ही जमा करना है।

किसी भी बात को न देख अपने को देखो

बाबा ने हम बच्चों को याद दिलाया है- बच्चे यह तुम्हारा अंतिम जन्म है, तुम देह सहित देह के सभी संबंधों को भूलो। बाबा ने हमें यज्ञ सेवाधारी बनाया तो हम ब्राह्मण बने। जो ब्राह्मण नहीं बनते वो देवता नहीं बन सकते। बाबा ने गोद में लिया, यज्ञ रचा सेवा कराने के लिए। बाबा का बच्चा बनने से, सेवाधारी बनने से ब्राह्मण बन गये। जैसे शिवबाबा का नाम गुणवाचक है, ऐसे हमारे गुण-कर्तव्य पर नाम मिला ब्राह्मण। हमारा बाप वृक्षपति है, कल्याणकारी है, जिसे यह याद है उसके ऊपर ग्रहचारी आ नहीं सकती।

गृहचारी किस पर आती है? धन, सम्बन्ध और शरीर पर। जब वृक्षपति बाप के बच्चे बने तो शरीर की गृहचारी भी चली गई, सम्बन्ध में सुख है, झगड़ा हो नहीं सकता। सम्पत्ति में भी किसके सामने हाथ नहीं फैला सकते। दाता के बच्चे हैं। बृहस्पति की दशा है। वृक्षपति बाप के बच्चों को सुख देखना है जरूर। मैं वृक्षपति बाप का बेटा हूँ- यह वरदान सदा याद रहे। अगर ब्रह्मा मुखवंशावली हूँ तो सबकी जन्म पत्री वाचने, देखने वाला हूँ, सफलता का सितारा हूँ- हमारे ऊपर गृहचारी आ नहीं सकती। अगर आती है तो हटा देनी चाहिए। जो अच्छे ऊंचे ब्राह्मण हैं वो औरों की भी गृहचारी हटा देते हैं। नीच ब्राह्मण जादू मंत्र डालने वाले होते हैं। वो हैं जैलेसी वाले ब्राह्मण। किसी को सुखी देख सहन नहीं कर सकते। कोई ऐसे भी हैं जो एक-दो से कंपटीशन करते रहते, किसी से भेंट करना, किसी को क्रिटिसाइज़ करना - यह ऊंचे ब्राह्मणों का धंधा नहीं है। उनकी एकरस स्थिति बन नहीं सकती। उन्हें अन्दर से सबकी

दुआयें मिल नहीं सकती। अगर स्थिति अच्छी है तो सबकी दुआयें मिलेंगी। वो किसी को भी न देख एक ईश्वर को देखेगा। न पुरानी दुनिया को देखेगा, न यहाँ किसी को देखेगा। क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है, हमको क्या करना है। क्या मुझे चेकिंग करने की ड्यूटी मिली हुई है? हरेक को ड्यूटी मिली हुई है- अपने आपको सम्भालने की। जो अपने आपको नहीं सम्भालता उसे बाबा कोई ड्यूटी नहीं देता। तो मुख्य बात है अपनी स्थिति को अन्दर मजबूत बनाना है। सयाना वह है जो अन्दर की लगन में मगन

रहे। लगन को कम न करे। बीती बातों का ख्याल कर रोना नहीं है, अगर रोते हैं तो एकरस स्थिति नहीं है। स्थिति नीचे-ऊपर तब होती है जब हमारी मर्जी से काम नहीं होता है। मेरी मर्जी कहाँ से आई! हमारी सदा शुभ भावना, शुभ कामना रहे। झामा की नूँध है। हम कभी लड़ाई-झगड़ा कर नहीं सकते क्योंकि हमें अपकारियों पर उपकार करना है, मुख चलाना नहीं है। अगर मूढ़ भी बदल जाता है तो यह भी ठीक नहीं है। अब तक भी इस प्रकार के संस्कार हैं तो ठीक नहीं। इसके लिए जितना चेक करेंगे उतना अच्छा है। चेक वह कर सकता है जो अन्तर्मुखी है, जिसे एकरस स्थिति बनाने का लक्ष्य है। किसी भी बात को न देख अपने को देखो, बाबा को देखो, जो बाबा को नहीं देखता उसे बाबा भी नहीं देखता।

जो अपने को चेक करता है उसे फट से पता चलता है कि मेरे में क्या कमी है। जो अपनी कमी को स्वीकार करता है बाबा उसे इशारा देता है, किसी के द्वारा दे देगा या स्वप्न में दे देगा।



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

ऑलमाइटी बाबा के द्वारा जो नॉलेज मिलती है उस नॉलेज को स्मरण करते रहो तो नॉलेजफुल बनते जायेंगे। नॉलेज ही भविष्य विश्व की बादशाही दिलायेगी। क्योंकि बादशाही करने की भी हमको शक्ति चाहिए। राजाई पद पाने के लिए शक्ति चाहिए। अच्छी तरह से पढ़ो, दिल से पढ़ो। हमारी पढ़ाई संस्कारों को चेंज कर रही है। इस देह में

जितना देही अभिमानी उतना निर्भय

निमित्त हम बैठे हैं। खुद तो बाबा द्वारा पावन बने हैं, दुनिया को भी पावन बनाने के लिए बैठे हुए हैं। बाकी इस देह से कोई लगाव नहीं है। लगाव होगा तो अभिमान भी होगा, अहंकार भी होगा।

निरहंकारी बनेंगे तो नम्रता आयेगी। जरा भी अहंकार होगा तो नम्रता ठहर नहीं सकेगी। अहंकार नम्रता को धक्का देकर निकाल देता है। नम्रता बड़ा मीठा बनाती है। अहंकार किसी को दवाने की कोशिश करता है। नम्रता स्नेही, सहयोगी बना देती है। नम्रता भाव से हम भगवान के भी नजदीक आ जाते हैं, अहंकार से भगवान से भी दूर चले जाते हैं। नम्रता से भगवान के भी सहयोगी बन सकते हैं। तो संगमयुग की घड़ियों में हम ऐसा पुरुषार्थ करें जो दिन-प्रतिदिन हमारी चढ़ती कला हो। दिन तो छोड़ो, सुबह से रात तक आज मेरी कितनी चढ़ती कला हुई? कल क्या थे, आज कितना आगे बढ़े हैं! आगे बढ़ते जा रहे हैं तो लगता है अभी उड़ती कला भी आ जायेगी। पहले जैसे रूकती या ठहरती कला न हो, उतरती कला न हो, इससे छूट जायें। दिनों-दिन चढ़ती कला

तो अपने में विश्वास बैठता है। अभी दिखाई पड़ता है ड्रामा में हमारी चढ़ती कला का अच्छा पार्ट है। हमारे निमित्त औरों को भी फायदा मिल रहा है। उसकी खुशी और नशा उड़ती कला में ले आता है। जैसे बाबा उड़ा रहा है, बाबा चला रहा है। साथ चल रहे हैं। अभी उड़ा रहा है। उड़ने में क्या चाहिए? वायुब्रेशन। पंछी एक-दो से न्यारे हैं। एक-दो

से अलग हैं। लेकिन वायुब्रेशन ऐसा होता है जो एक उड़ता है तो दूसरे का दिल करता है मैं भी उड़ूँ। दिन-प्रतिदिन इतने प्योर बनते जा रहे हैं, वृत्ति शुद्ध बनती जा रही है, प्युअर वायुब्रेशन से उड़ते जा रहे हैं।

पंछी हल्का है तब उड़ सकता है। किसी भी प्रकार की डाली को पकड़ कर नहीं रखता। कैसे उड़ूँ यह संकल्प भी आया तो किसी बात को पकड़ कर बैठा है। उसको कोई आधार चाहिए परन्तु अपने को निराधार बना लें। एक बाबा का सूक्ष्म सहारा है, साथ है। एक ही परमात्मा बाप सर्वशक्तिवान है, वो सहारा भी देता है, साथ भी देता है, लेकिन निराधार भी बनाता है। और कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। आगे-पीछे हमारी देखभाल करता है। हम भी उनको अन्दर से छोड़ते नहीं हैं। बहुत सूक्ष्म तार मजबूत रखी है जो खींच कर ले जा रही है। इसी कारण से कभी माया खींच नहीं सकती। कोई भयानक रूप डरा नहीं सकता।

डरना भी देहभान की निशानी है। जितनी देही अभिमानी स्थिति होगी उतना निर्भय होंगे।



राजयोगिनी दादी जानकी जी